

वार्तालाप-544, नेल्लूर (आंध्र प्रदेश), दिनांक 29.03.08
Disc.CD No.544, dated 29.03.08 at Nellore (Andhra Pradesh)

समय: 00.01-03.35

जिज्ञासु: बाबा, अभी अच्छे-अच्छे सर्विस करनेवाले भी शरीर छोड़ के जाते हैं।तो उन्होंने का एक्ट हमें देखकर हम कन्फ्यूज होते हैं।

बाबा: मिसाल दो। अच्छे-2 सर्विस करनेवाले कौन और उनकी अच्छी सर्विस का प्रूफ क्या आया?

जिज्ञासु- कोई-2 ऐसे बोलते हैं कि ऐसे शरीर ऐसे छोड़ के जाते हैं। तो....

बाबा- 1-2 का मिसाल बताओ। जिन्होंने अच्छी सर्विस की हो। और....

जिज्ञासु- वष्णवी बहनजी हैं उन्होंने शरीर छोड़ दिया वो तो इतना सर्विस कर रही थी।

बाबा- सर्विस कर रही थी, एक तरफ गहना भी बहुत ढेर सारा पहनती थी। तो सर्विस हो गई या प्रिससर्विस होगी?

जिज्ञासु- प्रिससर्विस।

बाबा- सर्विस तो नहीं हुई। अच्छा, सर्विस का प्रूफ भी तो कुछ होना चाहिए। होना चाहिए कि नहीं होना चाहिए?

जिज्ञासु- होना चाहिए।

बाबा- और प्रमचक्कर का प्रूफ ज्यादा हो तो? हार्ट कमजोर होता हफ़तब ही हार्टफेल होता हफ़ क्या? हार्ट की बीमारी उनको पहले से ही थी।

Time: 00.01-03.35

Student: Baba, now those who do good service also leave their bodies and go.So, we are confused seeing their act.

Baba: Give an example. Who are the ones who do good service and what proof is available of their good service?

Student: Some say that some people are leaving their bodies like this....

Baba: Give the examples of one or two people who have done good service. And...

Student: Sister Vaishnavi left her body; she was doing so much service.

Baba: She was doing service... and on the other hand she used to wear a lot of jewelry too. So, was it service or disservice?

Student: Disservice.

Baba: It was not service. OK, there should be some proof of service too. Should there be [proof] or not?

Student: There should be.

Baba: And what if there is more proof of creating disturbances? Heart failure occurs only when the heart is weak. What? She was already suffering from a heart disease.

जिज्ञासु- ऐसे-2 पॉइंट्स को पकड़ के कन्फ्यूज होकर के.... ऐसा क्यों होता-2?

बाबा- कौन कहता हफ़

जिज्ञासु- कोई-2 हमारे....

बाबा- जो दूसरे कहते हैं उन्हें कहने दो। जो बाप के सीकिल में बच्चे होंगे-2 वो तो ज्यादा सर्विस करेंगे और जो ज्यादा सर्विस करेंगे उनको बाप खुद बढकर के याद करेगा। बाप खुद याद करेगा तो

बाप की उनको पॉवर मिलेगी या भूत-प्रेतों की पॉवर मिलेगी? बाप की पॉवर मिलेगी। अचानक बड़े-2 एकदम काम करते-2 शरीर छूट जाना ये तो जल्हे ब्रह्माबाबा की मौत हो गई ऐसी मौत हो गई।

Student: People become confused regarding such points [and ask:] why does it happen like this?

Baba: Who says this?

Student: Some of our people...

Baba: Let others say what they wish to say. The *seekiladhey* (long lost and now found) children of the Father will do more service and the Father will Himself remember those who do more service. If the Father remembers them Himself, will they get the power of the Father or will they get the power of ghosts and spirits? They will get the power of the Father. To die, to leave the body suddenly while sitting or while doing some work is like the death of Brahma Baba.

दूसरा जिज्ञासु- ब्रह्मा बाबा तो सर्विस अच्छा किया ना, बाबा?

बाबा- ब्रह्माबाबा सर्विस अच्छा किया फिर रिजल्ट क्या निकला? अच्छी सर्विस का रिजल्ट भी तो यहाँ निकलना चाहिए। नहीं निकलना चाहिए? क्या निकलना चाहिए? नर से नारायण बनना चाहिए कि नहीं चाहिए? बना?

जिज्ञासु- नहीं बना।

बाबा- कोई सर्विस बहुत अच्छी करे जल्हे कि पाण्डव भवन या कि माउन्ट आबू में वो कौन भाई हूँ सूरज भाई। बहुत अच्छी सर्विस करता हूँ सारा एण्डवान्स ज्ञान सुनाता हूँ बाप को छुपा देता हूँ क्या? बाप को गुप्त कर दिया और अपने को नॉलेज के आँख पर वाह-वाही ले लिया। तो सर्विस हुई या प्रिससर्विस हुई? ये तो प्रिससर्विस हो गई। ब्रह्माबाबा ने भी जिसने ज्ञान दिया उसका नाम कभी रखा? ब्रह्माकुमारी विद्यालय नाम क्यों रखा? प्रजापिता नाम क्यों नहीं रखा? ये बाप को गुप्त कर देना ये क्या सर्विस हुई? सारा ज्ञान कोई दे दे और बाप को गुप्त कर दे तो प्रिससर्विस हो गई या सर्विस हुई? प्रिससर्विस हो गई। उस प्रिससर्विस का ये फल हुआ कि इस जीवन में रहते-2 उनको सिद्धि नहीं हो पाई। सारा तन लगाया, सारे संबंधी लगाये, सारा धन लगाया, मन भी जितना था वो भी लगाया लेकिन प्राप्ति? प्राप्ति इसी जीवन में नहीं हुई। तो मुख्य बात तो हूँ बाप को प्रत्यक्ष करना।

Another Student: Baba, Brahma Baba did good service, didn't he?

Baba: If Brahma Baba did good service, what was the result that emerged? The result of good service should also emerge here. Should it not emerge? What [result] should emerge? Should he become Narayan from *nar* (a man) or not? Did he become that?

Student: He didn't.

Baba: If someone does very good service; for example, who is that brother in Pandav Bhavan, Mount Abu? Sooraj bhai. He does very good service. He narrates the entire advance knowledge [but] hides the Father. What? He hid the Father and took praise for himself on the basis of knowledge; then was it service or disservice? This is disservice. Did Brahma Baba ever use the name of the person who gave him knowledge? Why did he keep the name Brahmakumari Vidyalay? Why did he not keep the name Prajapita? Hiding the Father – Is this service? If someone gives the entire knowledge and hides the Father, then is it disservice or service? It is disservice. The result of that disservice was that he did not succeed in his lifetime. He invested the entire body, all the relatives, he invested the entire wealth, he invested his mind completely but what about the attainments? He did not achieve the attainments in this birth. So, the main subject is to reveal the Father.

समय: 03.40-04.25

जिज्ञासु: सारी दुनिया तो बाप को याद करती है और बाप सेवागारी बच्चों को याद करता है।

बाबा- ठीक है।

जिज्ञासु- जो सर्विस करनेवाले होते हैं तो हमको बाप की याद का बल मिलेगा ऐसा समझकर के सेवा करेंगे इससे फायदा होता है या नुकसान?

बाबा: फायदा ही है। बाप की याद में जो ताकत है वो बच्चों की याद में ताकत थोड़ी ही है। बाप व्याभिचारी याद करेगा कि अव्यभिचारी याद करेगा?

जिज्ञासु- अव्यभिचारी।

बाबा- तो बाप की याद में ज्यादा पॉवर है। बाप जिस समय जिस बच्चे को याद करेगा तो वो अव्यभिचारी याद होगी या व्यभिचारी याद होगी? अव्यभिचारी याद होगी। तो उसमें कितनी पॉवर होगी। बच्चे तो द्वापरयुग से लेकर के कितने व्यभिचारी बने हैं। आदत पड़ी हुई है एक सेकण्ड भी बुद्धि एक जगह स्थिर नहीं रहती।

Time: 03.40-04.25

Student: The entire world remembers the Father and the Father remembers the serviceable children.

Baba: It is correct.

Student: If someone does service thinking that he will get power of the Father's remembrance, then does it bring benefit or harm?

Baba: It certainly brings benefit. The power that is there in the Father's remembrance is not there in the remembrance of the children. Will the Father remember in an adulterated (*vyabhichaari*) way or in an unadulterated (*ayabhichaari*) way?

Student: In an unadulterated way.

Baba: So, there is more power in the Father's remembrance. At whatever time, whichever child the Father remembers, will that be an adulterated remembrance or an unadulterated remembrance? It will be an unadulterated remembrance. So, that remembrance will have so much power! Children have become so adulterated since the Copper Age. They have become habituated to it. Their intellect does not remain constant at one place for even a second.

समय: 05.10-09.20

जिज्ञासु-आत्मा पावरफुल हो जायेगा।

बाबा- ठीक है।

जिज्ञासु- फिर निरोगी कंचन काया होगी?

बाबा- निरोगी कंचन काया भी होगी। अगर तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो निरोगी कंचन काया नहीं होगी? उन्ही की तो होगी। प्रीमा-2 पुरुषार्थ हुआ तो निरोगी कंचन काया कबसे होगी? सिर्फ न देने के आकार पर कोई सर्विसएबुल नहीं हो जाता है। कोई भी कन्यार्य हैं, यज्ञ में सरेन्टर होती है न देने के आकार पर सब सरेन्टर हो जाती है क्या? न उनके माँ-बाप ने दिया या कन्या ने दिया? माँ-बाप ने दिया। तो माँ-बाप का भाग्य बनेगा। वो भी देने के बाद फिर कही अगर वापस ले ले तो क्या होगा? दुनिया के नजरों में तो ये आ जायेगा कि दिया-4 बहुत दिया। फिर वापस ले लिया तो? तो कौनसा पद बनता है जो बना बनाया पद है वो भी नीचे चला गया।

जिज्ञासु- वापस लिया बाबा कोई?

बाबा- ये सब बताया नहीं जाता ह॥किसी व्यक्ति के बारे। हम तो जनरल बात बताई।

जिज्ञासु- कसा माँगेगा बाबा वापस?

बाबा- कोई एक मातायें थोड़े ही चल रही हैं साथ-2 में भाई भी तो चल रहे हैं ज्ञान में। अकेली मातायें चलती हैं ज्ञान में क्या? और सब जगह सुब्बाराव थोड़े ही ह॥सरोजिनी माता के साथ कि जससे चलायेंगे वससे सुब्बाराव भाई चल पोंगे। ऐसे ह॥क्या? नहीं।

Time: 05.10-09.20

Student: the soul will become powerful.

Baba: It is correct.

Student: Then will they receive a disease free, golden body?

Baba: They will receive a disease free, golden body too. Will they not receive a disease free, golden body if they make intense *purusharth*? Only they will receive [a disease free, golden body]. How will they receive a disease free, golden body if they make slow *purusharth*? Someone does not become serviceable just on the basis of giving wealth. There are virgins who surrender in the *yagya*; do all of them surrender on the basis of wealth? Was the wealth given by their parents or by the virgins? The parents gave it. So, the mother and the father will earn fortune. Even in that case, what will happen if they take it back after giving? It will certainly be visible to the eyes of the people of the world that they gave, they gave a lot, but what if they take it back? Then which post will they achieve? The post that they had achieved [after giving the wealth] also went down [if they take it back].

Student: Baba, did anyone take it back?

Baba: All this is not said; about any person. I have mentioned a general concept.

Student: Baba how can they take it back?

Baba: The mothers aren't following the knowledge alone; the brothers (i.e. husbands) are also following the knowledge. Do mothers alone follow knowledge? Moreover, all are not Subbarao (a brother) with Sarojini mata everywhere that Subbarao bhai will follow whatever she says. Is it so? No.

जिज्ञासु- बाबा ये भी कहते हैं ना तन-मन-न सब कुछ तेरा कहते हैं फिर भी तन को भी, मन को भी अपने मनमत पर चलाते हैं वो तो देना, लेना हो गया ना?

बाबा- देने के साथ लेना भी हो गया।

जिज्ञासु- पक्षे नहीं, तो भी हो गया ना?

बाबा- हाँ, जी। माना कोई भी बातों के एड्वरटाइजमेन्ट को नहीं सुनना चाहिए। बाबा ने एक ही बार कह दिया सब बातों का तंत- सुनी-सुनाई बातों से भारतवासियों ने दुर्गति पाई ह॥ अभी ब्रह्माकुमारी कितनी बातें करती ह॥ए॥वान्स पार्टी के बारे में। सुनी-सुनाई बातें हैं या प्रमिटकल उसको निथार करके देखा गया ह॥ किसी ने प्रूफ प्रमाण दिया? नहीं। जो सुना दिया, अखबारों में सुना दिया सुन लिया, टी.वी ने सुना दिया, दिखा दिया देख लिया, रेडियो ने सुना दिया; दिखा दिया सुन लिया। फिर किसी ने जाकर उसको देखा कि असलियत क्या ह॥ अभी फाईनल विनाश होगा तो ढेर सारे मरेंगे। कसे मरेंगे? यही ग्लानि के बाम्ब सुन-सुनकर के मरेंगे।

Student: Baba, they also say: our body, mind, wealth, everything is yours, yet they use the body and the mind according to their own opinion (*manmat*); so that giving is as good as taking back, isn't it?

Baba: It is like giving along with taking it back.

Student: Although it is not money, they took it, didn't they?

Baba: Yes. It means that you should not listen to the advertisement of anything. Baba has said just once[in one point] the essence of everything : the Indians have experienced degradation due to hearsay. Now the Brahmakumaris speak so much about the Advance party; is that hearsay or [is it something in] practical, has that been judged? Has anyone given proofs? No. Whatever they narrated, whatever the newspapers published, whatever was narrated, shown on the TV, whatever was narrated on the radio, they believed it. Then did anyone go and see what the reality is? Now when the final destruction takes place, numerous people will die. How will they die? They will die while listening to these bombs of defamation .

जिज्ञासु- अभी क्या हो रहा है जो ए०वान्स पार्टी के जो भाई-बहनें हैं उन्हीं के बीच ऐसा हो गया बाबा।

बाबा- ए०वान्स पार्टी में कोई एक तरह के बीजरूप आत्मायें हैं? सारे ही सूर्यवंशी-चंद्रवंशी हैं कि और-2 वंशों के भी हैं बीज ? (सभी- और-2 वंशों के भी हैं) तो जो और-2 वंशों के भी बीज होंगे वो तो ग्लानि करेंगे ना? ग्लानि कर के ए०वान्स पार्टी को ही उ० के रख देंगे। फिर भी सत्य की नष्ठा हिलेगी, ढुलेगी लेकिन ढूबेगी नहीं। अभी तो फाईनल परिक्षायें बाकी हैं अभी तो छोटी-मोटी परिक्षायें हुईं। इसलिए सुनी-सुनाई बातों पर अभी विश्वास नहीं करना चाहिए। अगर कोई बात है तो याद रखें बाप से पूछो। इतना ज्ञान सुनाने के बाद भी बाप के ऊपर अनिश्चय आ जाता है छोटी-मोटी बातें सुनकर के। हाँ, ऐसा ही हुआ होगा। ज्ञान सारा बेकार हो गया? सुनी-2 सच्ची-2 हो गई? खास बात यह है भाषा की। क्या? भाषा प्रब्लम जो है बहुत ऊपर-नीचे कर देती है भाषा प्रब्लम में गुरुओं की बन जाती है जो गुरु लोग होते हैं जो मनमानी चाल सुना दो। पूछनेवाले तो कुछ है ही नहीं। भाषा न जानने के बाद सारा उलटम- पल्टा हो जाता है। मुरली के पॉइंट, ज्ञान के पॉइंट्स अच्छी तरह बुद्धि में बैठते नहीं हैं क्योंकि भाषा तो जानते नहीं हैं। इसलिए गुरु जज्ञा चाहते हैं वज्ञा उसका क्लेरिफिकेशन कर देते हैं।

Student: Now this is happening among the brothers and sisters of the advance party Baba.

Baba: Are there the seed-form souls of one kind in the Advance party? Are all of them *Suryavanshis* and *Chandravanshis* or are there the seeds of other dynasties too? (Everyone said: there are those of the other dynasties too). So, those who are seeds of other dynasties will cause defamation, will they not? They will defame and blow away the Advance party itself. Yet the boat of truth will shake and quake but it will not sink. Now the final exams are yet to take place. Up until now small tests have taken place. This is why you should not believe in hearsay now. If there is any doubt ask the Father directly. Even after narrating so much knowledge, they lose faith on the Father by listening to small things; [they think:] “Yes, it must have certainly happened like this”. Did the entire knowledge go in vain? Did hearsay become true (for you)? The main problem is language. What? The language problem makes you oscillate up and down. Due to the language problem, the gurus prosper. The gurus narrate whatever comes to their mind. Nobody is there to ask. As they do not know the language, everything turns upside down. The points of Murli, the points of knowledge do not sit in the intellect properly because they do not know the language. That is why the gurus give clarifications as they wish.

समय: 10.20-12.29

जिज्ञासु- बाबा, माताजी पूछ रही ह॥ कि अभी भारत में ढेर सारे मन्दिर ह॥ लेकिन ज्ञान सुनाने वाला मन्दिर तो एक ही ह॥ फिर भी क्यों इतने मन्दिर हो गये?

बाबा- यही तो बोला ह॥ मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर, गुरुद्वारे सब खलास हो जावेंगे, एक ही बड़ा मन्दिर रह जावेगा। एक ही मन्दिर रह जावेगा, सब जितने भी गिरिजाघर, मन्दिर, गुरुद्वारे हैं, मन्दिर ह॥ मस्जिद ह॥ सब खलास हो जायेंगे। कोई कहे कि अभी क्यों नहीं हो गये? वो तो ऐसे ही ह॥ जल्ले पूरी तेल में, घी में पाली जाती ह॥ अच्छी तरह तेल गरम हो जायेगा तो पूरी पकने के ऊपर (बाद) फिर ऊपर आयेगी। जब तक तेल अच्छी तरह गरम नहीं होता ह॥.. ये ज्ञान का तेल ह॥ याद का घृत ह॥ ये घी जब तक गरम ही नहीं होगा, योगाग्नि तीखी ही नहीं होगी तो पाप कर्म भस्म कैसे होंगे? हमारे पाप कर्म ही भस्म नहीं हुए हैं (तो) भक्ति कैसे भस्म हो जायेगी? अभी भक्ति का जोर भी बढ़ता जा रहा ह॥ और बच्चे जो ह॥ वो श्रीमत की बरखिलाफी करते हैं तो 100 गुना बोझ भी चढ़ता जा रहा ह॥ नहीं चढ़ रहा ह॥

जिज्ञासु- चढ़ रहा ह॥

बाबा- फिर?

दूसरा जिज्ञासु- अभी बाबा सभी की याद ठंणी हो गई ह॥ इसका कारण क्या ह॥

बाबा- ठंणा याद हो चुका ह॥ ठंणी चीज कब होती ह॥ कोई चीज ठंणी कब होती ह॥

जिज्ञासु- जब आग बुझ जाती ह॥

बाबा- हाँ। आग भी बुझी हुई ह॥ और फिर जो पुरुषार्थ ह॥ वो भी ठंणा हुआ पड़ा ह॥ बर्फीले मौसम ह॥ बुद्धि जामड़ी हुई पड़ी ह॥ (तो) पुरुषार्थ कहाँ से होगा?

Time: 10.20-12.29

Student: Baba, a mother is asking: there are many temples in Bharat (India) now, but the temple where knowledge is narrated is only one. Then why are there so many temples?

Baba: This is what has been said, all the temples, mosques, churches, *gurudwaras*¹ will be destroyed, only one big temple will survive. ... Only one temple will survive; all the churches, temples, *gurudwaras*, mosques will be destroyed. If someone asks: why aren't they [destroyed] yet? It is the same case as that of a *puri*, when it is put in oil or *ghee* (clarified butter); when the oil heats up properly, the *puri* will come up after being cooked. Until the oil heats up properly... this is the oil of knowledge, the *ghrit* (clarified butter) of remembrance. Until this *ghee* becomes hot, until the fire of yoga becomes intense, how will the sinful actions be burnt to ashes? How will *bhakti* (devotion) be burnt to ashes, when even our sinful actions themselves are not burnt to ashes? Now the force of *bhakti* is also increasing and the children are accumulating 100 times sins too, when they go against shrimat. Are they not accumulating [sins]?

Student: They are accumulating.

Baba: Then?

Another student: Baba, now the remembrance of everyone has become cold (has lost its force); what is the reason for this?

Baba: Has the remembrance become cold? When does something become cold? When does something become cold?

Student: When the fire goes off.

¹ Place of worship of the Sikhs.

Baba: Yes. The fire has gone off as well as the *purusharth* has become cold, it is a chilly season, the intellect has become jammed, then how will they make *purusharth*?

समय: 12.30-14.40

जिज्ञासु: अभी पुरुषार्थ नहीं हुए तो फिर आगे-आगे परीक्षा ज्यादा होता जाता है।

बाबा: ये थोड़े ही। अभी पुरुषार्थ इसलिए नहीं हो रहा है कि सच्चाई क्या है सामने नहीं है। कहते हैं मुख से - बाबा आया हुआ है। थोड़ा सा कोई कुछ सुना देता है। अरे, बाबा-वाबा कुछ नहीं। सब ऐसे ही दुनिया चलती चली आ रही है। बाबाओं-वाबाओं से दुनिया भरी पड़ी है। बस उखाड़ा गया निश्चय। हो गया भगवान काफूर। निश्चयबुद्धि विजयते। पुरुषार्थ में भी विजय कब होगी? जब निश्चयबुद्धि बने। ये पक्का समझ लो जो बाप की ग्लानि कर के सुनाते होंगे वो घर बैठनेवाले होंगे। मदान छोड़ करके आकर के घर में बैठ गये होंगे। क्या कहा? (दूसरे जिज्ञासु ने कुछ पूछा।) जो भी हो। जो भी कोई भी प्रकार की ग्लानि कर के सुनाते हैं, मिक्स कर के बात सुना देते हैं वो जरूर पुरुषार्थ से हारे हुए हैं। एक सिपाही होता है कि मरता रहता है। प्राण निकलते रहते हैं तो भी लड़ाई लड़ता रहता है। क्या? और एक सिपाही ऐसे होते हैं कि देखा कि अरे, ये तो सब हार रहे हैं। बस, लेट गये आराम से दो-चार मुर्दे ऊपर से डाल लिये करने दो युद्ध। मुर्दे बन के पड़ गये मुर्दों के बीच।

Time: 12.30-14.40

Student: If we do not make *purusharth* now, the tests will increase in future.

Baba: It is not like this. Now they are unable to make *purusharth* because the truth is not in front of them. They say through their mouth, Baba has come. If someone narrates something (against Baba, then they say:) Arey, there is nothing such as Baba and so on. This world has been continuing just like this; this world is full of these Babas and so on. That is all; they lose faith. [The intoxication of] God has vanished. The one who has a faithful intellect will become victorious. When will you achieve victory in *purusharth*? When you develop a faithful intellect.... Understand this for sure that those who defame the Father and narrate [defamation] will be the ones who sit at home. They must have left the battlefield and must be sitting at home. What? (Another student asked something). Whoever it may be. Whoever narrates any kind of defamation or mixes up things and narrates them must have certainly accepted defeat in making *purusharth*. One is such kind of soldier that he is about to die; he is about to breathe his last, yet he keeps fighting. What? And another one kind of soldiers is such, when they see: "Arey, we are being defeated", they lie down comfortably and put two – four corpses on themselves [thinking:] let them fight. They lie down like corpses amidst corpses.

समय: 14.45-18.38

जिज्ञासु: तीखी याद के लिए थोड़ा युक्तियाँ बताइये बाबा।

बाबा: तीखी याद के लिए? तीखी याद की युक्तियाँ यही हैं। तन-मन-न सब तेरा, न संबंधी कोई मेरा। कहेंगे हमारा शरीर काम नहीं देता। बाबा अव्यक्त वाणी में कहते हैं, मुरली में कहते हैं- माताओं को पंख लग जावेंगे ईश्वरीय सेवा के। क्या घर में रहकर के ही इलाज होता है बाहर की दुनिया में जाकर के इलाज नहीं होता? बाबा के घर में इलाज नहीं होता क्या? नहीं होता है। होता है कि नहीं होता है (किसीने कहा- होता है) फिर? जितना गुड डालेंगे उतना मीठा होगा। गुड नहीं डालेंगे मीठा नहीं होगा।

Time: 14.45-18.38

Student: Baba, give some ideas for intense remembrance.

Baba: For intense remembrance? The idea for intense remembrance is, everything including the body, mind, wealth is yours. No relative is mine. They say, our body does not work. Baba says in the *Avyakta vanis*, in the Murlis, the mothers will develop wings of Godly service. Does someone get treatment only at home? Can't someone get treatment in the outside world? Can't someone get treatment at Baba's home? Can't someone [receive treatment]? Can he receive or not? (Someone said: He can.) Then? The more jaggery you add the sweeter it will be. If you don't add jaggery, it won't be sweet.

जिज्ञासु- बूढ़ी-2 माताओं में ये शंका आ रही है बाबा अभी...।

बाबा- बूढ़ी-2 माताओं को पंख लग जावेंगे ईश्वरीय सेवा के।

जिज्ञासु- ...हम तो बूढ़े-2 हो रहे हैं, जवान बच्चे तो शरीर छोड़ के जाते हैं। हमारा क्या हाल होगा बाबा?

बाबा- जवान बच्चे शरीर छोड़ के जाते हैं, अगर उनके भक्ति के संस्कार। मुरली में बोला है कि नहीं- भक्ति के संस्कार होंगे तो शरीर छोड़ना पड़ेगा? ये सोना पहना, चाँदी पहना, हार पहना ये भक्ति के संस्कार नहीं हैं?

जिज्ञासु-.....

बाबा- फिर? शरीर छोड़ना नहीं पड़ेगा? बाबा (ने) तो कितनी मुरलियों में कह दिये इस समय जेवर नहीं पहना है कान काट के ले जावेंगे। अब दिखावा करने की आदत है क्रिश्चियनटी की आदत है तो क्रिश्चंस के साथ नहीं जाना पड़ेगा? क्रिश्चियनवाली आत्मायें वो फिर प्रवेश नहीं करेगी? ज्ञान के पॉइंट्स हर समय बुद्धि में एवररेपी रहने चाहिए। नौजवान शरीर छोड़ते जा रहे हैं तो हम कहाँ बचेंगे? अरे, साथ-2 ये भी तो बोला है कि कौन शरीर छोड़ेंगे? भक्तिमार्ग के संस्कार होंगे तो शरीर छोड़ना..... चाहे नौजवान हो, चाहे बूढ़ा हो, चाहे बच्चा हो। कोई भी हो। ज्ञान में चलनेवालों के अगर भक्तिमार्ग के संस्कार सौ परसेन्ट की स्टेज में पहुँच गये तो वो तो शरीर छोड़ेगा।

Student: Baba, old mothers are developing this doubt now...

Baba: Old mothers will develop the wings of Godly service.

Student: ...[They say:] We are growing old and young children are leaving their bodies. What will be our condition Baba?

Baba: Young children leave their body... if they have *sanskars* of *bhakti* Has it been said in the Murli or not that if you have the *sanskars* of *bhakti* you will have to leave your body? Wearing gold, silver, necklaces, aren't these the *sanskars* of *bhakti*?

Student said something.

Baba: Then? Will they not have to leave the body? Baba has said this in so many Murlis: you should not wear jewelry at this time. People may cut your ears and take away (your jewelry). Now they have the habit of showing off. If there is a habit of Christianity, will they not have to go with the Christians? Will the Christian souls not enter them? The points of knowledge should be ever ready in the intellect all the time. [You are asking:] When the young ones are leaving their bodies how can we survive? Arey, it has also been said who will leave their bodies. If there are the *sanskars* of the path of *bhakti*, [they will have to] leave the body.... whether it is a young person, an old person or a child. Whoever it may be. If the *sanskars*-of the path of *bhakti* reach cent percent- of those who are following the path of knowledge, then they will certainly have to leave their body.

जिज्ञासु- अमरनाथ के बच्चे अमर होना चाहिए ना?

बाबा- अमरनाथ के बच्चे बने तो। अमरनाथ के बच्चे तो आत्मा हैं। आत्मा बन गये कि देहभान आता ह॥कि हम ये भी पहनेंगे, वो भी पहनेंगे अच्छा लगे? ये देहभान ह॥कि अमरनाथ के बच्चे हैं? ऐसे ही अमरनाथ के बच्चे बन जाते हैं? अमरनाथ के बच्चे पहा॥ पर जाके अमरनाथ के पास पलेंगे न कि दुनियादारी में रहेंगे?

जिज्ञासु- ए॥वान्स पार्टी में आने के बाद तो जिन्दा रहना ह॥ना...

बाबा- ए॥वान्स पार्टी में भी तो दस तरह की ऋर्म की आत्मायें ह॥ एक ऋर्म के हैं क्या? यहाँ तो दस ऋर्मों के छिलके चढ़े हुए हैं। उनमें पास होनेवाले, फुल पास होनेवाले और इसी जीवन में रहते हुए कंचनकाया बनानेवाले जिनका शरीर नहीं छूटेगा वो सिर्फ सूर्यवंशी हैं। बाकी 9 वंश वाले तो शरीर छोड़ के ऐसे ही चले जायेंगे। चंद्रवंशी भी बचेंगे लेकिन वो बचेंगे जो अपने को फुल सरेन्द्र कर देंगे सूर्यवंशियों के सामने। अगर नहीं झुके हैं, झुकते नहीं हैं तो उनको भी, उनको भी शरीर छोड़ना पड़ेगा। चंद्रवंशी रा॥ ह॥चंद्रवंशी रा॥ का सार कुल ह॥पूरा झुकेगा तो ठीक ह॥ चंद्रवंशी से सूर्यवंशी बन जायेगा; नहीं झुकेगा तो कौनसा वंशी रह जायेगा? चंद्रवंशी का चंद्रवंशी रह जायेगा। तो शरीर छो॥ना प॥गा।

Student: The children of Amarnath (Lord of immortality) should be immortal, shouldn't they?

Baba: They should become the children of Amarnath. The children of Amarnath are souls. Have they become souls or do they become body conscious [and say], we will wear this, we will wear that so that we look good. Is this body consciousness or are they the children of Amarnath? Do they become the children of Amarnath just like that? Will the children of Amarnath be sustained near Amarnath on the mountains or will they be busy in worldly affairs?

Student: They should be alive after entering the Advance party, shouldn't they?

Baba: Even in the Advance party there are ten kinds of souls belonging to ten religions. Do they belong to one religion? Here they are covered by the husk of ten religions. Among them those who pass, those who pass fully, those who achieve a golden body in this life itself, those who will not lose their bodies are just the *Suryavanshi*. As for the rest those belonging to the remaining 9 dynasties will leave their bodies and depart like this. The *Chandravanshi* will also survive, but only they will survive who surrender themselves fully in front of the *Suryavanshi*. If they haven't bowed [in front of Suryavanshis], if they do not bow, then they will have to leave their bodies too. There is *Chandravanshi* Radha and her entire clan; if it bows fully, it is ok. They will change from *Chandravanshi* to *Suryavanshi*. If they do not bow, then they will remain the one of which clan? They will just remain *Chandravanshis*. So, they will have to leave their body.

समय: 19.30-23.10

जिज्ञासु: ये लोकलाज की बात क्या बाबा? शोभा बहन पूछ रही ह॥...

बाबा: लोकलाज क॥से छूटे?

दूसरा जिज्ञासु- जेवर-गहनें सब नहीं पहनते ह॥तो बाहरवाले पूछेंगे ना आप क्यों नहीं पहनते?

बाबा- उनके सामने पहनते हो; यहाँ आकर पहनकर ब॥ठने की क्या जरूरत ह॥ ब्राह्मणों की सभा में जाकर के ब॥ठ के वहाँ पहनने की क्या जरूरत, सेन्टर में ब॥ठकर के पहनने की क्या जरूरत? और जो सरेन्डर ब्रह्माकुमारीयाँ ह॥ उनको पहनने की क्या जरूरत? उनको कोई दुनियावाले कहेंगे कि तुमने

क्यों नहीं पहने? जो लोक भस्म होनेवाला है उस लोक की लाज का बहुत ध्यान रहता है। ये क्या कहेगा, वो क्या कहेगा वो सब भस्म होनेवाले हैं। और जो दुनिया सामने खड़ी हुई है तीसरे आँख से दिखाई पड़ रही है कि अब ये नई दुनिया आनेवाली है। वहाँ ये गहने पहने की कोई जरूरत नहीं होगी। लक्ष्मी-नारायण को जो गहने दिखाये हैं वो दिव्यगुणों के गहने हैं। ये स्थूल गहने नहीं हैं। तो नई दुनिया की लोकलाज का ध्यान नहीं रहता है और जो दुनिया सामने खड़ी हुई है उसका ध्यान नहीं; और जो दुनिया भस्म होनेवाली है पता नहीं कब भस्म होना शुरू हो जाये उसका ध्यान इतना ज्यादा है।

Time: 19.30-23.10

Student: Baba, what is this subject about *loklaaj* (public honour)? Shobha behen (a sister) is asking.

Baba: [Do you mean to ask:] How should we avoid *loklaaj*?

Another Student: If we do not wear jewelry, necklace etc. then the outsiders ask, why don't you wear?

Baba: You can wear it in front of them. What is the need to wear it and sit here? What is the necessity (to wear jewelry) while sitting in the gathering of Brahmins? What is the necessity to wear (jewelry) while sitting in the center? And what is the necessity for the surrendered Brahmakumaris to wear it? Will the people of the world ask them, why haven't you worn them? They are very concerned about the honour of the world that is going to be burnt to ashes. [They think:] "What will this person say? What will that person say?" All of them are going to be burnt to ashes. And the world that is standing in front of you, which is visible to you through your third eye that the new world is going to come now; there will be no need to wear these jewelry etc. there. The jewelry that has been shown on Lakshmi-Narayan are the jewelry of divine virtues. They are not physical jewelry. So, you don't care about the honour of the new world; you don't care for the world that is in front of you; but you are so much concerned about the world that is going to be burnt to ashes; you don't know when it will start burning to ashes.

अरे, ये महाभारत युद्ध तो करना पड़ेगा सबको। ये सत्य-असत्य का युद्ध है इसमें से सभी को पसार होना पड़ेगा। गेट वे टू हेवन इज महाभारत। महाभारी महाभारत युद्ध से प्रसार हुए बगल कोई को भी स्वर्ग नहीं मिलेगा। कोई कहे कि हम झूठ की नष्टा में भी पाँव रखे और स्वर्ग में भी चले जाये, हो नहीं सकेगा। अरे, हमारे कुल का होगा वो तो थोड़ी सी बात सुनकर के ही हमारे तरफ खिंचा चला आवेगा। उसकी बातें मानते रहना, उसके-2 पीछे चलते रहना, उसको खुश करते रहना वो माननेवाला नहीं है। घर-परिवार के होंगे ज्यादा से ज्यादा प्रजावर्ग के बन जायेंगे। राजा-महाराजा तो बनने से रहे जब इतना विरोध कर रहे हैं। और जो ऊँचा पद पानेवाले हैं उनके लिए तो बाबा ने बोल दिया है एकदम सीधा-2 बोल दिया है लौकिक संबंधों से न कुछ पूछना है और न उनकी मत पर चलना है। जो राजा होता है वो किसी की सुनता है क्या? राजा बनने की क्वालिटी वाली आत्मा वो किसी के फायरेक्शन पर चलेगी क्या? वो अधिकारी होगी या किसी के अधीन होगी? यहाँ दिखाई पड़ेगा। कोई लौकिक संबंधों के अधीन नहीं। अधीन माना ही प्रजा, अधिकारी माना ही राजा। अपने अंदर झाँक के देखना अब ईश्वरीय नियमों पर चलने के हम कितने अधिकारी बने हुए हैं?

Arey, everyone will have to fight this war of Mahabharata. This is a war of truth and falsehood. Everyone will have to pass through it. Gateway to heaven is Mahabharata. Nobody can get heaven without passing through the massive civil war of Mahabharata. If someone says, “we will keep a leg in the boat of falsehood and will go to heaven as well”, that will not be possible. Arey, if he belongs to our clan he will be drawn towards us by listening to a few words. (As regards those who don't belong to our clan) If you keep accepting whatever he says, if you keep following him, if you go on making him happy, he is not going to accept. If they belong to your family, they may come in the category of subjects (*prajavarg*) at the most. They cannot become *raja-maharaja* (kings and emperors) because they are opposing so much. And as regards those who achieve a high post, Baba has said for them, He has said directly: “We should neither ask the *lokik* relatives anything nor should we follow their opinion”. Does a king obey anyone? Will a soul which has the quality to become a king follow anybody's directions? Will he be a controller or will he remain under someone's control? It will be visible here. They will not be subordinate to any *lokik* relative. Subordinate means subject (*praja*); controller means a king. Peep into yourself [to check:] how far have we become entitled to follow the Godly rules now?

समय: 23.59-27.12

जिज्ञासु: एक हफ्ते के पहले एक ब्रह्माकुमारी यहाँ आई थी।

बाबा- यहाँ?

जिज्ञासु- यहाँ। सुमित्रा माता का घर यहाँ पर ह॥वहाँ आई आकर के आप तो इतना ऊँचा बाप कहते ह॥ना तो आश्रम ज॥ रहे रहना ह॥ना? ऐसे गृहस्थ में रहने से कोई एट्रिक्शन नहीं रहता ह॥

बाबा: घर गृहस्थ में रहने से एट्रिक्शन नहीं होता ह॥

जिज्ञासु- एट्रिक्शन नहीं होता ह॥ना? ऐसे बोल के गई थी।

बाबा- किसका एट्रिक्शन? किस चीज का एट्रिक्शन?

जिज्ञासु- बाप को प्रत्यक्ष करने का।

बाबा- माना सन्यासी प्रत्यक्ष करेंगे? उनको जवाब दो- अर्जुन ज॥ गृहस्थियों को भगवान मिलता ह॥ अर्जुन ज॥ गृहस्थी भगवान को प्रत्यक्ष करते हैं, अर्जुन ज॥ गृहस्थी भगवान का तरफदारी लेते हैं या सन्यासी द्रोणाचार्य और भीष्म पितामह और कृपाचार्य ये भगवान की तरफदारी लेते हैं? वो भगवान को प्रत्यक्ष करते हैं? ँक से जवाब देना चाहिए। अरे, वो तो फंस गये हैं। निकल नहीं सकते हैं, अपनी कमजोरी को जानते हैं इसलिए उल्टी-2 बाते कर के सुनाते हैं गृहस्थी माताओं को कमजोर करने के लिए।

जिज्ञासु- अच्छे कपड़े पहनते नहीं ह॥जेवर आदि पहनते नहीं ह॥..।

बाबा- बाबा ने कौनसी मुरली में कहा कि लक-लके अच्छे-2 भीख माँग माँग करके अच्छे कपड़े पहनो? भीख माँगने से मरना भला। भीख माँग-2 करके तुम बढ़िया-2 मकान बनाके बठ जाओ, बढ़िया-2 कपड़े पहन लो, हजार-2 रुपये की साड़ी वो ज्यादा अच्छा ह॥

जिज्ञासु- 5 हजार देंगे तो त्रेतायुग में आयेंगे ऐसे बोल रहे...।

बाबा- 5 हजार देंगे तो ऐसे नहीं। 3 हजार देंगे तो त्रेता में आयेंगे, 7 हजार देंगे तो सात युग (सतयुग) में आयेंगे। तुक मिलाते ह॥

जिज्ञासु- ये कौनसी भगवान ह॥ कौन बताया बाबा ये?

बाबा- ब्रह्माकुमारी भगवान।

Time: 23.59-27.12

Student: A Brahmakumari had come here a week ago.

Baba: Here?

Student: Here. Sumitra mata's home is over here. She came there and said, you say that the Father is so high, so you should live like the ones living in an ashram, shouldn't you? There is no attraction when you live in a household.

Baba: There is no attraction when you live in household?

Student:...There is no attraction, is there? She said like this.

Baba: Attraction of what, of which thing?

Student: [The attraction] to reveal the Father.

Baba: Does it mean that the *sanyasis* will reveal Him? Give them the reply, do the householders like Arjun find God, do the householders like Arjun reveal God, do the householders like Arjun remain on God's side or do the *sanyasis* like Dronacharya, Bhishma Pitamah and Kripacharya² remain on God's side? Do they reveal God? You should give them a reply immediately. Arey, they are trapped. They cannot come out. They know their weaknesses, this is why they speak opposite things to weaken the mothers who live in house hold.

Student: [They say:] you don't wear nice clothes, jewelry etc...

Baba: Has Baba said in any Murli, we should wear good clothes by begging (for money)? It is better to die than to beg. Is it better to beg and build good houses, wear good clothes, wear saris costing a thousand rupees?

Student: [They say that] you will come in the Silver Age if you give 5 thousand rupees.

Baba: Not five thousand. [They say that] If you give 3 thousand rupees you will come in the Silver Age. If you give 7 thousand rupees (*saat hazaar*) you will come in *Saat yug* (the Golden Age), they compare things.

Student: What kind of God is this? Who said this Baba?

Baba: The God named Brahmakumaris ☺.

समय: 28.15-35.40

बाबा: माताओं को बताओ कि कोई बात अंदर अटकती हू तो खुल के पूछना चाहिए। ऐसे नहीं कि हम पूछेंगे तो बाबा बुरा मान जायेंगे। नहीं।

जिज्ञासु: माताजी पूछ रही हूँ जो हिन्दी नहीं जानते वो तो अच्छा पुरुषार्थ करते हूँ। हिंदी जाननेवाले बाप से बात भी करते हूँ पुरुषार्थ तो कम करते हैं।

बाबा: सब तरह के हूँ। ऐसा कोई जरूरी नहीं। हिन्दी नहीं जाननेवाले हैं वो भी अच्छा पुरुषार्थ करते हैं और बाबा से प्यार भी करते हैं और हिंदी जाननेवाले भी ऐसे हैं जो बाबा से प्यार भी नहीं करते, पुरुषार्थ भी अच्छा नहीं करते। देखो, उत्तर भारत हिंदी जाननेवाला हूँ। सारा नार्थ इण्डिया हिंदी बहुत अच्छी जानता हूँ शास्त्रों के अच्छे जानकर हूँ लेकिन बाबा को पहचानते नहीं; पहचानने की इच्छा भी नहीं करते।

जिज्ञासु- जिनको हिन्दी नहीं आता हूँ वो स्वर्ग में नहीं आयेंगे ऐसे बाबा ने बोला हूँ।

बाबा- ऐसा कोई बात नहीं। जिसको इस जन्म में हिंदी नहीं आता हूँ पिछले जन्म में ये गण्डी हूँ कि वो पिछले जन्म में हिंदी जाननेवाले प्रदेश में पढ़ा नहीं हुआ? आत्मा स्वदेशी-विदेशी होती हूँ या

² Characters in the epic Mahabhrata

शरीर स्वदेशी-विदेशी होता है (किसीने कहा- आत्मा।) आत्मा स्वदेशी-विदेशी होती है शरीर विदेशी हो सकता है। ये शरीर ने दक्षिण भारत में जन्म लिया तो भाषा नहीं जानता है। लेकिन ये कोई जरूरी नहीं कि जिसने दक्षिण भारत में जन्म लिया, भाषा नहीं जानता है। विदेशी भाषा जल्दी हो गई तो वो पूर्वजन्मों में भी उत्तर भारत में कभी जन्म नहीं लिया होगा। लिया होगा ना? तो ये कोई जरूरी नहीं है।

Time: 28.15-35.40

Baba: Tell the mothers that if they have any doubt inside, they should ask it openly. It is not that Baba will feel bad if we ask. No.

Student: Mataji is asking that those who do not know Hindi make good *purusharth*. Those who know Hindi speak to the Father, but make less *purusharth*.

Baba: There are all kinds of people. This is not necessary. Even those who do not know Hindi make good *purusharth* and also love Baba and even among those who know Hindi there are such ones who do not love Baba and do not make good *purusharth* either. Look, the entire northern India knows Hindi. The entire north India knows Hindi well; they know the scriptures well, yet they do not know the Father, they don't even desire to know the Father.

Student: Baba has said: those who don't know Hindi will not come in heaven.

Baba: It is nothing like this. The one who does not know Hindi in this birth, is there any guarantee that he wasn't born in a Hindi speaking area in the previous birth? Is a soul *swadeshi* (Indian) and *videshi* (foreigner) or is the body *swadeshi* and *videshi*? (Student: The soul.) Is the soul *swadeshi* and *videshi*? The body can be a *videshi* (foreigner). This body is born in South India; so it does not know the language. But it is not necessary that the one who is born in South India, who does not know the language (Hindi), whose language is like a foreign language would have never been born in North India in his previous births. He would have been born, wouldn't he? So, this is not necessary.

कोई ने 83 जन्म नार्थ इण्डिया में जन्म ले लिया, हिंदी भाषा वासी रहा आत्मा और कोई हिसाब-किताब ऐसा बन गया कि आखरी जन्म यहाँ लेना पड़ा तो क्या भगवान का प्यारा नहीं हो सकता? ये भावना फलाना कि जो दक्षिण भारत में जन्म लिये हुए है दक्षिण भारत में जन्म ले करके ज्ञान में चल रहे है एगवान्स में चल रहे है वो सब विदेशी है वो एक तरह की गलत धारणा फलाना है। क्या? विदेशी आत्मा नहीं होती है विदेशी शरीर होता है और शरीर आज इस जन्म में है अगले जन्म में नहीं रहेगा। इस जन्म में ये शरीर विदेशी है दक्षिण भारत का है पिछले जन्म में कोई जरूरी नहीं है कि वो दक्षिण भारत का ही हमको (उनको) जन्म मिला था।

जिज्ञासु- हिन्दी जो बाप की भाषा है वो बच्चों की भी भाषा वही होना चाहिए।

बाबा- होना चाहिए लेकिन बाईचान्स नहीं है तो इसका मतलब ये थोड़ा ही है कि बच्चा बड़े होकर के भाषा नहीं सीख सकता। सीख सकता है। अरे, आप यहाँ हैं अभी बंगल में हैं मातायें नहीं सीख पा रही हैं। बंगल से छूटी, कभी बाबा के पास पहुँच जायेंगी तो नहीं सिखेंगी? जो बाबा के पास पहुँची हुई मातायें हैं वो हिंदी नहीं बोल रही हैं? बोल रही हैं। ये भावना फलानेवाले देहभानी सान्ने हैं। जो ये भावना फलाने हैं ये विदेशी आत्मायें हैं वो भाषा नहीं जानती। हम सब विदेशी हैं और जो भाषा जानते हैं हिंदी भाषा वो ही स्वदेशी हैं। हम कह रहे हैं कि जो हिंदी भाषा जाननेवाले हैं बाप को नहीं जानते और बाप की मत पर चल भी नहीं रहे हैं और सारी विदेशियों की सारी परम्परायें अपना के बैठे हैं जिंदगी में वो विदेशी हैं।

[Suppose] someone was born in north India in 83 births; he was a Hindi speaking soul and due to some karmic account he had to be born in the last birth here; so, can't he be dear to God? To spread the feeling that all those who have been born in south India, those who are following the knowledge being born in south India, who are following the advance knowledge are *videshis* is like spreading wrong concepts. What? A soul is not *videshi*; the body is *videshi*. And today the body exists in this birth; it will not exist in the next birth. This body is *videshi* in this birth; it belongs to south India, but it is not necessary that he was born only in south India in the previous birth.

Student: The children should also have the same language i.e. Hindi as the Father.

Baba: It should be the same, but by chance if it is not the same, it does not mean that the child cannot learn that language after growing up. He can learn it. Arey, now you are here, the mothers are in bondage, hence they are unable to learn. If they become free from bondage, if they reach Baba's home, will they not be able to learn? Are the mothers who have reached Baba's home not speaking Hindi? They are speaking. Those who spread such feelings are body conscious buffaloes. Those who spread this feeling... [they think:] "These are *videshi* souls who do not know the language. We all are *videshis* and only those who know the Hindi language are *swadeshis*". I say, "those who know the Hindi language but do not know the Father and are not following the Father's directions either, who have adopted all the foreign traditions in their life are *videshis*".

टी.पी.गुणम (आंध्र प्रदेश), दिनांक 27.03.08

Dt. 29.03.08 at TPG (Andhra Pradesh)

समय: 07.35-11.00

जिज्ञासु: सुप्रीम सोल 108 में प्रवेश करते हैं ।

बाबा: सुप्रीम सोल 108 में प्रवेश करता हूँ फिर तो सर्वव्यापी होना चाहिए। अरे, वो एकव्यापी हूँ या सर्वव्यापी हूँ या 108 व्यापी हूँ क्या हूँ अभी से ही कर दिया शुरू?

जिज्ञासु- 108 में भी प्रवेश करते हैं एक मुरली में बताया था।

बाबा- सुप्रीम सोल नहीं प्रवेश करता हूँ सुप्रीम पार्ट बजानेवाला प्रवेश करता हूँ। तुम बच्चों में बापदादा प्रवेश कर सकते हैं। मैं सब में प्रवेश नहीं करता हूँ। जो ऋषिपिताये हैं वो भी ऊँचे ते ऊँच देवता में प्रवेश करते हैं या नीच देवताओं में प्रवेश करते हैं? सुप्रीम सोल सिर्फ एक में प्रवेश करता हूँ।

जिज्ञासु- 12 लिंग

बाबा- 12 लिंगों में वो एक प्रवेश करता हूँ जिसको कहते हैं महारूद्र। 11 हूँ सामान्य रूद्र।

Time: 07.35-11.00

Student: The Supreme Soul enters the 108 (beads).

Baba: Does the Supreme Soul enter the 108 (beads)? Then, He should be omnipresent. Arey, is He present in one (*ekvyaapi*), omnipresent (*sarvavyapi*) or present in 108? What is He? Have you started (saying omnipresent) from now itself?

Student: It was said in a murli, He enters 108 as well.

Baba: The Supreme Soul does not enter; the one who plays the supreme part enters. Bapdada can enter you children. I do not enter everyone. Do even the religious fathers enter the highest deity or the low deities? The Supreme Soul enters only one.

Student: The 12 lings....

Baba: The one who is called *Maharudra* enters the 12 lings. 11 are ordinary Rudra.

दूसरा जिज्ञासु- वो भी मुकरर तन ह॥

बाबा- मुकरर रथ में प्रवेश करता हूँ। कोई ये कह नहीं सकता, साबित नहीं कर सकता कि मेरे अंदर शिव बाप प्रवेश ह॥ हाँ, बच्चों को उठाने के लिए कोई में प्रवेश कर के दृष्टि देता हूँ, कोई में प्रवेश कर के वाचा की ताकत देता हूँ, कोई में प्रवेश कर के वायब्रेशन की ताकत देता हूँ। बाकी कोई कह नहीं सकता कि मेरे अंदर शिव बाप प्रवेश ह॥ अगर कहे तो बाप कहते हैं - वो कौन हैं?

जिज्ञासु- भस्मासुर।

बाबा- भस्मासुर नहीं। हिरण्यकश्यप। मुकरर रथारी भी नहीं अपने मुख से कहे कि मेरे अंदर शिव बाप प्रवेश ह॥ अगर कहे तो कौनसा दोष लगता ह॥ हिरण्यकश्यप बनने का दोष लग जाता ह॥ भगवान होगा तो भगवान को कहने की क्या दरकार कि मैं भगवान हूँ?

जिज्ञासु- सुप्रीम आत्मा प्रवेश करती ह॥ना? सुप्रीम आत्मा कौन?

बाबा- जो जन्म-मरण के चक्र में नहीं आती ह॥ गर्भ से जन्म नहीं लेती वो, वो एक मुकरर रथ में प्रवेश करता ह॥ बाप के रूप में। अगर रूद्रमाला के सभी मणकों में प्रवेश करे तो 11 रूद्र मुख्य माने जाते हैं। 108 की रूद्रमाला भी मानी जाती ह॥ और फिर बोला ह॥ पाँचसौ-सातसौ करो॥ भी रूद्रमाला के दाने हैं। बड़े ते बड़ी रूद्रमाला कितने की ह॥ पाँच सौ - सात सौ करो॥ तो सभी में प्रवेश करेगा क्या?

Another Student: Moreover, it is the permanent body (*mukarrar tan*).

Baba: I enter the permanent chariot (*mukarrar rath*). Nobody can say or prove that the Father Shiv enters him. Yes, in order to uplift the children I enter someone to give *drishti*. I enter someone to give the power of speech. I enter someone to give the power of vibrations. As for the rest nobody can say that the Father Shiv has entered me. If anyone says so, then the Father says, who are they?

Student: Bhasmasur.

Baba: Not Bhasmasur. Hiranyakashyap³. Even the permanent chariot cannot say through his mouth that the Father Shiv has entered him. If he says this, then he becomes guilty of what? He becomes guilty of being Hiranyakashyap. If he is God, where is the need for Him to say, I am God?

Student: The Supreme soul enters, doesn't He? Who is the Supreme Soul?

Baba: The one who does not pass through the cycle of birth and death, He is not born through a womb, He enters only one permanent chariot in the form of the Father. If He enters all the beads of the *Rudramala*; 11 Rudras are considered to be main; there is a *Rudramala* of 108 (beads) as well. And then it has been said, 5-7 billion (souls) are also beads of the *Rudramala*. How big is the largest *Rudramala*? 5-7 billion. So, will He enter everyone?

समय: 11.05-12.25

जिज्ञासु: अभी संगमयुग में ब्रॉ म॥बन में तो बुलाने पर ब्रह्मा आते हैं और यहाँ बच्चों के आगे क्लास करने के लिए वायब्रेशन तो कम से कम चाहिए ना बाप को आने के लिए? याद का वायब्रेशन।

³ a demon king who called himself God.

बाबा: अगर याद का वायब्रेशन चाहिए तो फिर मुर्कर हो जाने चाहिए। तो याद में बैठकर हम बुला ले। बुलाते हैं या बुला पाते हैं या कोई ने बुलाया? मैं बुलाने से नहीं आता हूँ। जब आना होता है तो स्वतः ही आ जाता हूँ। इन ब्रह्मा से पूछो कि मैं कब आता हूँ। इनको पता पता है इनको भी पता नहीं पता। मैं कब आता हूँ, कब चला जाता हूँ मेरे आने-जाने की तिथि-तारीख निश्चित हो ही नहीं सकती। ये भी एक बाप के पार्ट की पहचान है।

Time: 11.05-12.25

Student: Now in the Confluence Age, Brahma comes on being called to the broad madhuban and here at least the vibrations of remembrance are required to enable the Father to come to take class in front of the children, aren't they?

Baba: If the vibration of remembrance is required then it should become fixed. So, we should be able to call Him by sitting in remembrance. Do we call, are we able to call or has anyone called? I do not come on being called. When I have to come I come on my own. Ask this Brahma, when I come. Does this one come to know? Even this one doesn't come to know. There cannot be a definite date or day of my arrival and departure at all, when I come and when I go. This is also an indication of the Father's part.

समय: 12.28-14.40

जिज्ञासु: बाबा विष्णु को पूरा अलंकार क्यों दिखाते हैं अलंकार माना देहभान होती है।

बाबा: अलंकार देहभान होते हैं?

जिज्ञासु- ब्रह्मा को नहीं दिखाते हैं, शंकर को नहीं दिखाते हैं। देहीअभिमान के रूप में शंकर को दिखाते हैं। विष्णु को क्यों पूरा अलंकार दिखाते हैं?

बाबा- अलंकार जो है वो गुणरत्नों की निशानी है। जो दिव्यगुण हैं वो ब्राह्मणों में टिकते हैं क्या? आज दिव्यगुणारी दिखाई देते हैं और कल, कल गुणहीन बन जाते हैं। आज निश्चयबुद्धि दिखाई देते हैं; कल टोटल अनिश्चयबुद्धि दिखाई देते हैं। ब्रह्मणों के ये अलंकार नहीं हो सकते। शंकर को भी जनेऊ दिखाते हैं। इससे क्या साबित होता है शंकर भी सम्पन्न स्टेज बनने से पहले, शिव के साथ शंकर का नाम जुड़ने से पहले अपूर्ण पुरुषार्थी है या सम्पन्न पुरुषार्थी है अपूर्ण पुरुषार्थी है याद में बैठा हुआ दिखाते हैं इससे ही क्या साबित होता है सम्पूर्ण है या अपूर्ण है याद में बैठा है माना सम्पूर्ण है नहीं तो याद करने की क्या दरकार? और ब्रह्मा तो है ही दाढ़ी-मूँछ वाला। ब्रह्मा को तो पावन देवता कहेंगे ही नहीं।

जिज्ञासु- विष्णु सम्पन्न है तो काला रूप में क्यों दिखाया?

बाबा- वो तो यहाँ की यादगार दिखाई गई है कि विष्णु बननेवाली आत्मायें हैं विष्णु के रूप में पार्ट बजानेवाली आत्मायें हैं वो कालेपन में जब पार्ट बजाती है तो उनका यादगार दिखा दिया विष्णु का काला रूप, कृष्ण का काला रूप, शिव का काला रूप, राम का काला रूप सबको, जगन्नाथ का काला रूप, श्रीनाथ का काला रूप। नाम रख दिया श्रीनाथ और चेहरा दिखा दिया कलमूँहा।

Time: 12.28-14.40

Student: Baba, why are complete decorations (*alankaar*) shown for Vishnu? Decorations mean body consciousness, don't they?

Baba: Do decorations mean body consciousness?

Student: Brahma is not shown with decorations; Shankar is not shown with decorations either. Shankar is shown to be in soul consciousness (*dehiabhimani*). Why is Vishnu shown with full decorations?

Baba: The decorations are an indication of gems of virtues. Do the divine virtues remain constant in the Brahmins? Today they appear to be having divine virtues and tomorrow they become devoid of virtues. Today they appear the ones with a faithful intellect; tomorrow they appear to be the ones with total faithless intellect. Brahmins cannot have these decorations. Shankar is also shown to be wearing *janeu* (sacred thread). What does it prove? It proves that before achieving the perfect stage, before the name Shankar is suffixed to Shiv, is Shankar an incomplete *purushartha* (the one who makes spiritual effort) or a perfect *purushartha*? He is an incomplete *purushartha*. He is shown to be sitting in remembrance. What does it prove? Is he perfect or imperfect? When he is sitting in remembrance does it mean he is perfect? Otherwise, where is the necessity to remember? And Brahma is the one having beard and moustache. Brahma will not be called a pure deity at all.

Student: If Vishnu is perfect, why is he shown in a dark form?

Baba: That is a memorial of the present time that has been shown: When the souls who are going to become Vishnu, who are going to play a part in the form of Vishnu play the part of darkness, then their memorial is shown in the form of the dark form of Vishnu, the dark form of Krishna, the dark form of Shiv, the dark form of Ram; everyone... the dark form of Jagannath, the dark form of Shrinath. The name given is Shrinath and the face is shown... black faced.

समय: 14.45-17.10

जिज्ञासु: बाबा ने कहा कि रजो स्टेज क्रॉस किया तो अनुभव होता है। बाबा ने कहा।

बाबा: रजोप्रधान स्टेज को जब हम क्रॉस करेंगे माना द्वापरयुगी सीढ़ी की अंतिम स्टेज जब हम क्रॉस कर जावेंगे तो प्रिस्चार्ज होना ही बंद हो जावेगा। मन्सा के जो व्यर्थ संकल्प चलते हैं वो भी बंद हो जावेंगे। कर्मेन्द्रियाँ जो व्यर्थ कर्म करती हैं और कर्मेन्द्रियों से जो क्षरण होता है शक्ति का वो भी बंद हो जायेगा।

दूसरा जिज्ञासु- अभी तक वो स्टेज नहीं बनी ना?

बाबा- अभी तक देहभान है। देहभान है तो अनुभव भी होता होगा।

जिज्ञासु- देहभान तो अनुभव हो रहा है बाबा, वो स्टेज क्रॉस किया ये अनुभव नहीं हो रहा है।

बाबा- लेकिन बाबा ने बोला है तो निश्चयबुद्धि होना चाहिए ना। कि बाबा ने बोला है तो ऐसी भी स्टेज हमारी नम्बरवार आवेगी।

जिज्ञासु- आवेगी।

बाबा- आवेगी ना। नहीं आवेगी? निगेटिव संकल्प चलायेंगे तो निगेटिव हो जायेगा।

Time: 14.45-17.10

Student: Baba has said, we will have an experience when we cross the stage of *rajo*⁴.

Baba: When we cross the *rajopradhan* stage, i.e. when we cross the last step of the step of the Copper Age, the last stage, then the discharge will stop. The waste thoughts that go on in the mind will also stop. The waste actions that the bodily organs perform and the discharge of energy that takes place through the bodily organs will also stop.

Another Student: We haven't achieved that stage yet, have we?

⁴The stage in which we are dominated by activity and passion.

Baba: We are still body conscious, aren't we? If we have body consciousness, then we must also be experiencing it.

Student: Baba we are indeed experiencing body consciousness but we are not experiencing that we have crossed that (*rajopradhan*) stage.

Baba: But when Baba has said it, we should have a faithful intellect, shouldn't we? That when Baba has said this then we will also achieve such a stage number wise.

Student: We will achieve it.

Baba: We will achieve it, will we not? Will we not achieve it? If we create negative thoughts, then the result will be negative.

जिज्ञासु- कभी-2 ये संकल्प भी आता है कि आखरीन कब तक।

बाबा- होना ये चाहिए कभी नहीं; अभी। अभी तक के पुरुषार्थी जीवन में भी बहुतों ने अनुभव किया होगा कि लम्बे समय तक इन्द्रियाँ जीत जख्मी स्टेज अनुभव होती हैं। भल थोड़े समय के लिए हुई हो लेकिन अनुभव सबको हुआ है। थोड़ा या बहुत। अगर थोड़ा अनुभव हुआ है तो क्या लम्बा नहीं बनाया जा सकता? थोड़ा अनुभव हुआ है तो उसे लम्बा भी बनाया जा सकता है। माया या मायावी पुरुष या मायावी स्त्री या मायावी पदार्थ हमारा पीछा तब तक ही करेंगे जब तक उनके साथ हमारा हिसाब-किताब जुड़ा हुआ है। वो 63 जन्मों का हिसाब-किताब हमने ही जोड़ा है। वो हिसाब-किताब पूरा होगा और उनके प्रभाव में आना हमारा बंद हो जावेगा।

Student: Sometimes we also think, finally when (will we achieve that stage)....

Baba: Instead of when, it should be now. Many must have experienced in their *purusharthi* life so far that they experience the stage of being victorious over the organs for a long time. Although it may have been for a short period, everyone has experienced it. More or less. If it has been experienced for a short period, can't it be made long term? If it has been experienced for a short term it can also be changed into long term [experience]. Maya or *mayavi* (illusory) men or *mayavi* women or *mayavi* things will chase us only as long as we have *karmic* account with them. It is we who have established those *karmic* accounts of 63 births with them. When that *karmic* account is over, we will stop being influenced by them.

समय: 21.17-24.50

बाबा: एक प्रश्न आया है एक क्लेरिफिकेशन में पीछे बोला होगा कि द्वापरयुग, कलियुग में ऐसे क्रूर राजाएँ भी हुए हैं जिन्होंने अपनी रानियाँ को अगर व्यभिचार करते हुए पकड़ लिया तो उनको जमीन में गड़वा खोद के गाढ़ देते थे। सर ऊपर खुला रहता था और दही ढालकर कुत्ते छोड़ देते थे और कुत्ते उनको नोच-नोचकर के खा जाते थे। इसकी शूटिंग क्लिप होती है।

बाबा (उत्तर)- अभी तक तो ऐसी शूटिंग हुई नहीं। हुई है क्या? नहीं हुई। लेकिन आगे ऐसा टाईम आनेवाला है। व्यभिचार जो है वो देह अभिमान के कारण पनपता है या बिना देह अभिमान के व्यभिचार पनपता है जो रानियाँ इतने देहभान में आती हैं कि अपना देहभान उनसे कन्ट्रोल नहीं होता और वो राजा को छोड़ कर के और-2 पुरुषों में आसक्त हो जाती हैं। तो उनको ये सजा मिलती है। अगर ये साबित हो जाये कि गड़वे में, अवन्ति के गड़वे में गिरती है और गिरने के बाद मिट्टी से चारों ओर देह अभिमान की मिट्टी से इतनी परिपूर्ण हो जाती है भर जाती है कि जो व्याभिचारी कुत्ते हैं वो नोच-नोच के खा जाते हैं।

Time: 21.17-24.50

Baba: A question has been asked: It must have been said in a clarification that there have even been such cruel kings in the Copper Age, Iron Age that if they caught their queens indulging in adultery they dug a pit in the ground and buried them [alive] , with their head above , they poured yoghurt on their head and left dogs at them and those dogs used to bite them and eat them. How is its shooting performed?

Baba (answer): Up till now such a shooting has not been performed. Has it been performed? It hasn't been performed. But such time is going to come in future. Does adultery flourish due to body consciousness or without body consciousness? The queens become so body conscious that they are unable to control their body consciousness and they leave the king and become attracted to other men. So, they get this punishment if this is proved. They fall into the pit of degradation and after falling they are completely covered by the mud of body consciousness from all over to such an extent that the adulterous dogs bite them and eat them up.

दूसरे शब्दों में मुरली में भी बोला हूँ जो गायें दूध नहीं देती; माना दूसरी आत्माओं को जो बाप कहते हूँ सुख दो और सुख लो...। जो गइयाँ दूध नहीं देती हूँ. कोई जानवर गऊओं की बात हूँ संगमयुग में या चतुर्थ गऊओं की बात हूँ ह्यूमन गऊओं की बात हूँ ह्यूमन गऊओं की बात हूँ जो सुख रूपी दूध नहीं देती हूँ दुःख ही दुःख देती रहती हैं ऐसी देह अभिमानी गऊओं का अंत में क्या हश्र होगा कि कसाईयों को पाल दी जायेगी और कसाई उनको काट-काटकर के उनका देह अभिमान खाते रहेंगे।

जिज्ञासु- कसाई माना कौन?

बाबा- कसाई माना गाय काटनेवाले। मुसलमान होते हैं।

जिज्ञासु- यहाँ की बात हूँ

बाबा- और कहाँ की बात हूँ ऐसा टाईम आनेवाला हूँ

In other words it has also been said in the Murlī that the cows which do not give milk , what the Father says, give and take happiness; the cows who do not give milk... is it about animal cows or is it about some living cows, i.e. human cows in the Confluence Age? It is about the human cows. Those who do not give the milk of happiness and keep giving nothing but sorrow, what will be the fate of such body conscious cows in the end? They will be put before the butchers and the butchers will cut them into pieces and keep eating their body consciousness.

Student: Who is a butcher?

Baba: Butcher means those who slaughter cows. They are the Muslims.

Student: Is it about this time?

Baba: When is it about then? Such a time is going to come.

समय: 24.55-26.25

जिज्ञासु: यह सब सीताएं हैं ना?

बाबा: तुम सब सीताएं हो।

जिज्ञासु- हूँ ना? तो ये बात पुरुषों को भी लागू होता हूँ क्या? अभी जो पुरुष तन में हैं उसको भी लागू होता हूँ क्या ये?

बाबा- पुरुषों को भी ये बात लागू होती है तुम सब सीतार्ये हो। सब श्रीमत की लीका से नीचे-ऊपर होनेवाली हो। कोई कम, कोई ज्यादा।

Time: 24.55-26.25

Student: All these are Sitas, aren't they?

Baba: You all are Sitas.

Student: We are, aren't we? Does this apply to men too? Does this apply to all those who are in male bodies also?

Baba: You all are Sitas - This is applicable to the men as well. All of you cross the line of *Shrimat* to some extent or the other. Some cross less, some cross more.

समय: 25.30-31.40

जिज्ञासु: बाबा आज के क्लास में व्यास और रामायण का लिंक बताया ना बाबा ने लेकिन उसका क्लारिफिकेशन तो क्लास में नहीं आया।

बाबा: माना जो शास्त्र लिखनेवाला है विशेष, शास्त्र लिखनेवाला जो विशेष शास्त्राकार है वो कौन है व्यास ही है। जो द्वापर के आदि में महाभारत, वेद आदि लिखनेवाला था वही फिर द्वापर में मध्य में आकर के वाल्मीकि रामायण भी लिखता है रामवाली आत्मा और वही कलियुग में आकर के तुलसीदास के रूप में हिंदी में रामायण लिखता है। इससे साबित होता है कि व्यासवाली आत्मा ही राम बनती है। इसका व्यास का जन्म भी साबित होता है वाल्मीकी का जन्म भी साबित होता है और तुलसीदास का भी जन्म साबित होता है।

Time: 25.30-31.40

Student: Baba mentioned a link between Vyas and Ramayan in today's class, didn't he? But we didn't get a clarification for it in the class.

Baba: It means, the one who is especially the writer of the scriptures... Who is the special writer of the scriptures? It is Vyas only. The soul of Ram who wrote Mahabharata, Veda, etc. in the beginning of the Copper Age writes Valmiki Ramayana in the middle of the Copper Age and the same soul writes Ramayana in Hindi in the form of Tulsidas in the Iron Age. It proves that the soul of Vyas himself becomes Ram. This soul is proved to be born as Vyas, Valmiki and Tulsidas as well.

.....
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.